शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २४ : नई दिल्ली : १६-२२ सितम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ९१, सर्व १४३, सानंद जसोल में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम निरंतर जारी है। साध्वी वैराग्यश्रीजी का संथारा १३ सितम्बर को सायं ६.५५ पर सम्पन्न हो गया है। प्रायः प्रतिदिन वर्षा हो जाने से मौसम काफी अनुकूल है।

समझें पापों को-८

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है-**मायं चज्जवभावेण**--ऋजुता से माया को जीतो। मनुष्य यदा-कदा माया का प्रयोग भी कर लेता है। आयारो में कहा गया है-**माई पमाई पुणरेइ गब्भं**--मायावी और प्रमादी आदमी बार-बार गर्भ (जन्म) धारण करता है। आत्मा को मलिन बनाने के लिए माया भी जिम्मेवार तत्त्व है। आचार्य सोमप्रभसूरि ने कहा-**मायामविश्वासविलासमंदिरम्**। माया अविश्वास के रमण करने का एक स्थान है। जहां छलना है, प्रवंचना है, वहां विश्वास को टिकने में कठिनाई होती है। दसवेआलियं में कहा गया-**माया मित्ताणि नासेइ**--माया मित्रता का नाश करने वाली होती है। जो मायाशील है, उसके ज्यादा मित्र बनने कठिन होते हैं, क्योंकि पता नहीं वह कब धोखा दे दे। वे पुरुष, वे मनुष्य पवित्र होते हैं, जो सरलता और निश्छलता का जीवन जीते हैं।

मनस्येकं वचस्येकं वपुष्येकं महात्मनाम्।
मनस्यन्यद् वचस्यन्यत् वपुष्यन्यद् दुरात्मनाम्।।

जो महात्मा या संत होते हैं, उनके मन में जो होता है, वही वाणी में होता है और वही उनके आचरण में होता है। जो दुरात्मा होता है, उसके मन में कुछ, वाणी में कुछ और कार्यकलाप में कुछ होता है। कथनी-करनी में असमानता रहती है। सरलता के लिए बच्चे को उद्धृत किया जाता है। मेरा ऐसा मानना है कि बच्चे में सरलता होती है तो उसमें नादानी भी होती है। बच्चे जैसी सरलता को स्वीकार करने के लिए, कोई बच्चे जैसी नादानी कर ले, यह कोई अच्छी बात नहीं है। बच्चा अज्ञानी होता है। वह न तो सर्प को समझता है, न अग्नि को समझता है। वह कहीं भी हाथ डाल देता है। ऐसी ही नादानी बीस-पचीस वर्ष का युवक करने लगे तो वह कैसा लगेगा? बच्चे की सरलता तो अनुमोदनीय है, पर उसमें अज्ञानता भी होती है। मैं उस सरलता को अधिक महत्त्व देना चाहूंगा जो ज्ञान के साथ जुड़ी हुई है। धोखा दे सकने में समर्थ व्यक्ति यदि सरलता को नहीं छोड़ता तो वह विशिष्ट बात होती है।

मुझे स्मरण हो रहा है एक बार पश्चिम रात्रि में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी विराजमान थे। संत लोग उनके उपपात में बैठे थे। गुरुदेव ने संतों से प्रश्न किया--'बताओ, साधुओं! अवस्था बढ़ने के साथ-साथ विकास किस चीज का होता है और ह्रास किस चीज का होता है?'

एक वरिष्ठ संत ने जवाब दिया--'गुरुदेव! अवस्था बढ़ने के साथ-साथ अनुभव का तो विकास होता है और सरलता का ह्रास होता जाता है।' आज के बच्चे तो काफी होशियार होते हैं। कम्प्यूटर और टीवी के आसपास रहने वाले और मोबाइल रखने वाले बच्चे काफी तेज होते हैं।

मां बैठी थी। दोपहर का समय था। वह स्टोर में रखे डिब्बों पर उसमें रखी सामग्री की पहचान के लिए उन पर लेबल लगा रही थी। उसके सात-आठ वर्ष के बच्चे को कुतूहल हुआ। उसने भी अपनी मां से लेबल चिपकाने की अनुमति मांगी। मां ने अनुमति दे दी। वह उसे वस्तु का नाम लिखी पर्ची देती और बच्चा उसे निर्दिष्ट डिब्बे पर चिपका देता। कुछ ही देर बाद उसने अपनी मर्जी से नमक लिखा हुआ लेबल उठाया और चीनी के पात्र पर उसे चिपका दिया। मां का ध्यान उसके कार्यकलाप पर पहले से ही था। उसने बच्चे से कहा--'यह क्या कर रहे हो? चीनी के डिब्बे पर नमक का लेबल?'

बच्चे ने कहा--'जानता हूं मां, लेकिन ऐसा मैं चींटियों को धोखा देने के लिए कर रहा हूं। हमें तो पता है कि इसमें चीनी है, लेकिन चींटियां इस पर नमक का लेबल लगा देख इसकी ओर रुख ही नहीं करेंगी।'

बच्चे की अपनी नादानी और बुद्धिमत्ता थी, किन्तु साधना यह है कि व्यक्ति समझदार होने पर भी छलना में न जाए। साफ रहना चाहिए, साफ कहना चाहिए और साफ सुनना भी चाहिए। व्यावहारिक जीवन में कई बार ऐसा लोगों को कहते सुना जा सकता है--'मैं तो साफ-साफ कहनेवाला आदमी हूं, किसी को अच्छा लगे या बुरा?' ऐसे लोगों से मेरा कहना है कि भाई, तुम साफ-साफ कहने वाले हो तो दूसरों की साफ-साफ सुनने की क्षमता भी तुममें होनी चाहिए। जो बात जैसी है, उसे वैसी ही कहना चाहिए। किसी को ठगने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

दो सेठों की मुलाकात हुई। बातचीत के प्रसंग में पता चला कि एक सेठ के बाईस वर्ष का लड़का है और दूसरे सेठ के अठारह वर्ष की लड़की है। दोनों सेठ अपनी संतानों की शादी के लिए योग्य वर-वधू की तलाश में थे। दोनों समान हैसियत वाले थे। संयोगवश हुई इस मुलाकात को दोनों ने अपना भाग्य माना। लेकिन लड़का-लड़की के बारे में आवश्यक जानकारी लेना जरूरी था। लड़की वाले की ओर से लड़के के बारे में जानकारी मांगी गई तो उसने कहा--'मेरा लड़का लाखों में एक है। स्वभाव से विनम्र, सुन्दर, अच्छी कद-काठी का और शैक्षणिक योग्यता में एम.बी.ए. उत्तीर्ण है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सबको एक दृष्टि से देखता है।' लड़की वाला सेठ प्रभावित हुआ।

अब लड़के वाले सेठ की ओर से लड़की के बारे में जानकारी मांगी गई तो उसने कहा--'गृहकला में दक्ष, मृदुभाषी, सुशील और सुन्दर है, आपके बेटे की तरह मेरी बेटी भी एम.बी.ए. उत्तीर्ण है। सबसे बड़ी बात तो यह कि कामकाज से जी नहीं चुराती और परिश्रमी इतनी कि दिन भर एक टांग पर काम करती रहती है।' अपने बेटे की बहू की सेठ ने जो कल्पना कर रखी थी, वह साकार प्रतिमा के रूप में जैसे सामने आकर खड़ी हो गई। फोटो और बायोडाटा के आदान-प्रदान की कोई जरूरत नहीं समझी गई। दोनों ने उसी समय शादी के लिए परस्पर रजामंदी दे दी। दिन निश्चित हो गया।

धूमधाम से लड़कीवाले सेठ के यहां लड़के की बारात आई। लड़का सचमुच सुन्दर था, लेकिन रात्रि में भी काला चश्मा लगाए रखना कुछ लोगों को अटपटा लगा। फिर भी 'नया फैशन' मानकर लोगों ने इस बारे में कोई जिज्ञासा नहीं की। उधर जयमाल के लिए लड़की को उसके भाई अपनी गोद में उठाकर लाए और सोफे पर बैठाया। लड़के वालों ने इसे लाड-प्यार में पली बहन के प्रति भाइयों का स्नेह माना। वास्तविक राज तब खुला जब फेरे का समय आया और पंडितजी ने मंत्रोच्चार के साथ दोनों को खड़े होकर आवश्यक रस्म के निर्वाह का निर्देश दिया। उस समय दोनों की हकीकत सामने आ गई। जिसके लिए कहा गया था कि सबको एक दृष्टि से देखता है, वह एकाक्षी (एक आंख वाला) था और जिसे परिश्रमी और दिन भर एक टांग पर काम करती रहने वाली बताया गया था, उसके पैर एक ही था। लड़का और लड़की--दोनों के पिता ने कूट भाषा का प्रयोग कर वास्तविकता को छिपाते हुए एक दूसरे को ठगा था। अब एक दूसरे को कहते भी तो क्या कहते? किसी को ठगने वाला कभी स्वयं भी ठगा जा सकता है।

धर्म के क्षेत्र में सरलता का बड़ा महत्त्व है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि निर्वाण वह प्राप्त

करता है, जिसके हदय में धर्म होता है। धर्म उसके हदय में होता है, जो शुद्ध होता है और शुद्ध वह होता है, जो ऋजु होता है, सरल होता है।

गार्हस्थ्य में भी सरल रहने का प्रयास करना चाहिए। जितना संभव हो आदमी को कुटिलता से बचना चाहिए। व्यक्ति को अपने जीवन में पारदर्शिता रखनी चाहिए कि जब चाहो, जहां चाहो, जिस तरफ से भी चाहो, देख लो, हमारे पास छिपाने को कुछ भी नहीं है। व्यापार-धंधा करते हुए भी आदमी को चाहिए कि वह सरलता का दामन कभी न छोड़े। बेईमानी से कमाई गई करोड़ों की दौलत की अपेक्षा ईमानदारी से कमाए गए कुछ सौ या हजार कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण होते हैं। ईमानदारी और सरलता भी एक बड़ी संपत्ति है। हमारी आस्था सचाई के प्रति हो। हमें सचाई को खोजने का, सचाई को आत्मसात् करने का और वैसा ही व्यवहार करने का प्रयास करना चाहिए। माया और झूठ--इन दोनों का गठजोड़ है। माया और मृषा--दोनों मिल जाते हैं तो यों लगता है, जैसे पाप और ज्यादा सघन हो गया हो।

दादा की गोद में बैठा एक शिशु अगर दादा की दाढ़ी खींचने का प्रयास करता है तो दादा उसको बुरा नहीं मानता, बल्कि आनंदित होता है। लेकिन यही काम अगर उसका युवा पुत्र करे तो? पिता शायद पुत्र की यह धृष्टता बर्दाश्त कैसे कर पाएगा? यह बालक की सरलता है जो उसकी उद्दण्डता और धृष्टता को भी क्षम्य बनाकर स्नेह और वत्सलता में परिणत कर देती है।

हमें विचार करना चाहिए कि दिन-रात में कभी कुटिलता का मौका आता है क्या? आत्मचिंतन करें कि आज सवेरे उठने के बाद से लेकर शयन करने तक किसी के साथ कुटिलता तो नहीं की? अगर कपटाई की है तो सोचें कि उसके बिना मेरा काम नहीं चल सकता था क्या? बिना कपट किए अगर काम चल सकता था तो कपटपूर्ण व्यवहार मैंने क्यों किया? क्यों नहीं मैंने सरलता का व्यवहार किया? जहां सरलता है, वहां माया से होने वाला कर्मबंध नहीं होता। इसके विपरीत जहां कपट है, छलना है, झूठ है, वहां आदमी कर्म बांध लेता है। जो आदमी माया, गूढ़ माया, असत्य वचन और कूट तौल-माप करता है, उसे तिर्यंच गति के आयुष्य का बंध हो सकता है, वह पशु की योनि में भी जा सकता है। फिर पता नहीं कितना कष्ट उसे भोगना पड़ सकता है, उसकी गति खराब हो सकती है। हम अभी मनुष्य हैं तो तिर्यंच गति में क्यों जाएं? देव गति में जाएं तो वह एक बात है, मोक्ष में जाएं तो वह परम बात है। लेकिन मनुष्य होकर नरक गति में जाना पड़े, तिर्यंच गति में जाना पड़े, यह वांछनीय बात नहीं है। शास्त्रकार ने कहा--ऋजुता का अभ्यास करके हमें माया को जीतने का प्रयास करना चाहिए।'

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

जीवन की पोथी से पढ़ाएं शिक्षक

५ सितम्बर। *अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का चौथा दिन पर्यावरण शुद्धि दिवस के रूप में समायोजित हुआ। कार्यक्रम में बाडमेर क्षेत्र के विधायक श्री मेवाराम जैन तथा पचपदरा क्षेत्र के विधायक श्री मदन प्रजापत ने अपने भावोद्गार व्यक्त किए। चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री शान्तिलाल भंसाली ने आगन्तुक अतिथियों के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कषाय को विफल बनाने की प्रेरणा प्रदान की।*

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--जैन दर्शन में पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु आदि को जीव माना गया है। व्यक्ति जीवों के प्रति अनर्थ हिंसा का प्रयोग न करे। पर्यावरण की दृष्टि से भी यह महत्त्वपूर्ण तथ्य है। पानी आदि के प्रयोग का संयम अहिंसा और पर्यावरण--दोनों दृष्टियों से लाभदायी बन सकता है। जीवन में संयम और मितव्ययिता हो। व्यक्ति लक्ष्य बना ले तो अपनी हर प्रवृत्ति को संयमपूर्वक कर सकता है।' पूज्यवर ने आगे कहा--'व्यक्ति के जीवन में गुणों का महत्त्व होता है। अच्छे कपड़े पहनने

और अच्छा रूप होने से व्यक्ति महान नहीं बनता, वह अच्छा कार्य करने से महान बनता है। इसलिए व्यक्ति अपने जीवन में सद्गुणों को विकसित करने का प्रयास करे।'

शिक्षक दिवस के संदर्भ में पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'शिक्षक निर्माता होता है, जो विद्यार्थियों के जीवन का निर्माण करता है। वह विद्यार्थी के लिए ज्ञानदाता और उपकारी होता है। शिक्षक कागज की पोथी के साथ अपने जीवन की पोथी से भी विद्यार्थियों को पढ़ाने का प्रयास करे। यदि शिक्षक का जीवन सद्गुणसंपन्न होगा तो विद्यार्थी उससे प्रेरणा ले सकेंगे।'

कटक (ओडिसा) से समागत संघ की ओर से बारहव्रत स्वीकरण, प्रतिक्रमण कंठस्थ आदि के संकल्प पत्र तथा आचार्यवर का हस्तनिर्मित चित्र पूज्यप्रवर को समर्पित किए गए। आज रात्रि में आदर्श विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने 'पर्यावरण की पुकार' नामक रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया।

चेतना में है तेजस्विता

६ सितम्बर। *अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का पांचवां दिन। नशामुक्ति दिवस का समायोजन। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि मदनकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री ओम बांठिया ने अपने भावों को प्रस्तुति दी। मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में नशे से होने वाले दुष्परिणामों की चर्चा करते हुए नशामुक्त रहने की प्रेरणा दी।*

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो चेतना आवृत रहती है, वह मंद हो जाती है। हमारी चेतना में ज्ञान, दर्शन, शक्ति और आनंद की तेजस्विता है, किन्तु मोहकर्म से आवृत होने के कारण चेतनारूपी सूर्य की तेजस्विता मंद पड़ जाती है। आदमी नशा करता है, इसके पीछे भी मोह का प्रभाव है। नशे का आदी हो जाने के बाद उसे छोड़ पाना मुश्किल हो सकता है। पहले व्यक्ति शराब को पीता है, फिर शराब उसे पीने लग जाती है। कहा भी गया है कि मद्यपान से चित्त भ्रान्त होता है। भ्रान्तचित्त व्यक्ति पापाचरण कर लेते हैं और दुर्गति को प्राप्त होते हैं।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'समाज और परिवार में शराब के कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। शराब के आधार पर वोट प्राप्त करना भी उचित कैसे कहा जा सकता है? नशामुक्ति के द्वारा अनेक अपराधों को नियंत्रित किया जा सकता है। व्यक्ति शराब पीकर थोड़े से सुख के लिए बहुत को खो देता है। यह उसकी मूर्खता है। नशे का परित्याग भोग का संयम है। व्यवस्था परिवर्तन और हदय परिवर्तन के द्वारा नशे की समस्या से काफी हद तक बचा जा सकता है।' पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश 'नशामुक्त जसोल' अभियान को अधिक गतिशील बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यवर के प्रवचन के उपरान्त जसोल निवासिनी श्रीमती कमलादेवी (धर्मपत्नी-श्री जसराज ढेलड़िया) के मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में उनके परिवार की ओर से मीना बालड़ ने गीत प्रस्तुत किया और श्री महेन्द्र चोपड़ा ने भावाभिव्यक्ति दी। जसोल की एक अन्य श्राविका श्रीमती रामीदेवी (धर्मपत्नी-श्री मांगीलाल गोगड़) की मासखमण की तपस्या के प्रसंग पर उनके परिजनों की ओर से श्री हितेश गोगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए तथा श्रीमती विमलादेवी डोसी चोपड़ा ने गीत का संगान किया।

रात्रि में बालोतरा ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं ने 'सुबह का भूला' नामक परिसंवाद प्रस्तुत किया।

पहले हो आत्मानुशासन

७ सितम्बर। *अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत छठा दिन 'अनुशासन दिवस' के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। डीडवाणिया राजकीय महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुशीला राठी ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। राजस्थान के पूर्व गृहराज्य मंत्री श्री अमराराम चौधरी ने अनुशासन की महत्ता पर प्रकाश डाला।*

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अनुशासन एक उपाय है, जिसके द्वारा व्यक्ति दुष्कृत्यमुक्त हो सकता है। सज्जन व्यक्ति अनुशासन को हितकर और दुर्जन व्यक्ति उसे अप्रिय मानता है। अनुशासन दूसरों पर किया जाता है। उसकी अपेक्षा भी है, किन्तु उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है अपनी आत्मा पर अनुशासन करना। आत्मा पर अनुशासन करने के लिए शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों पर अनुशासन करना चाहिए। जिसने इन चारों पर अनुशासन करना सीख लिया, समझें उसने आत्मानुशासन को साध लिया। जो स्वयं पर अनुशासन करना नहीं जानता, वह दूसरों पर अनुशासन करने का अधिकारी कैसे हो सकता है?'

पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा--'अनुशासन लोकतंत्र और राजतंत्र--दोनों में वांछनीय होता है। यदि अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा नहीं है तो स्वच्छन्दता को सिर उठाने का मौका मिल सकता है। स्वतंत्रता और स्वच्छन्दता में बहुत अन्तर है। यदि सर्वत्र स्वच्छन्दता छा जाए तो राष्ट्र विनाश को प्राप्त हो सकता है। विकास के लिए अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा नितान्त आवश्यक है। जहां उच्छृंखलता है, सभी महत्त्वाकांक्षी हैं, वह राष्ट्र उच्चस्तर का नहीं बन सकता।'

अनुशासनहीनता पर अंकुश लगाने की आवश्यकता पर बल देते हुए आचार्यवर ने कहा--'अनुशासन का लंघन नहीं होना चाहिए। अनुशासनहीनता पर उचित रूप में कार्यवाही होनी चाहिए, ताकि उच्छृंखलता पर लगाम लग सके। यदि तत्काल उचित कार्यवाही नहीं होती है तो अनुशासन को तोड़ने के लिए दूसरों का साहस भी जाग सकता है। संगठन की सुदृढता में अनुशासन का बड़ा महत्त्व है। अनुशासन और व्यवस्था की जानकारी संगठन के सदस्यों को होनी चाहिए। इससे जानकारी के अभाव में होने वाला प्रमाद रुक सकेगा। अनुशासन के महत्त्व का आकलन कर अपने जीवन में उसके विकास का प्रयास करें।' कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को आचार्यवर ने नशामुक्ति का संकल्प कराया।

दक्षिण यात्रा का प्रथम चतुर्मास हैदराबाद में हो--इस प्रार्थना के साथ लगभग २१६ व्यक्तियों का संघ पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुआ। ६-८ सितम्बर तक संघ ने दर्शन-उपासना का लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम में हैदराबाद तेरापंथी सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री राजकुमार सुराणा ने श्रीचरणों में अपनी प्रार्थना प्रस्तुत की। सामूहिक गीत के माध्यम से भी हैदराबादवासियों ने अपनी भावनाएं पूज्य चरणों में समर्पित कीं।

बीड़ पदार्पण की प्रार्थना के साथ लगभग ६० व्यक्तियों का संघ पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुआ। कार्यक्रम में बीड़ तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री अतुल दयासागर मौजकर ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। रात्रि में जसोल ज्ञानशाला द्वारा 'लाएंगे नया सवेरा' नामक परिसंवाद को प्रस्तुति दी गई।

प्रेक्षाध्यान पूर्वजन्म अनुभूति शिविर परिसंपन्न

पूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा ३-७ सितम्बर तक समायोजित प्रेक्षाध्यान पूर्वजन्म अनुभूति शिविर आज परिसंपन्न हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में इस संदर्भ में मुनि नीरजकुमारजी ने गीत का संगान किया। शिविरार्थी श्रीमती सुमति नाहटा, दीपक जैन एवं श्री रामप्रकाश ने अपने शिविरकालीन अनुभव प्रस्तुत किए। शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। परम पावन आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'प्रेक्षाध्यान पूर्वजन्म अनुभूति शिविर का क्रम चला। यह भी साधना का प्रयोग है। अध्यात्म की साधना और आराधना करना अपने आप में महत्त्वपूर्ण बात होती है। शिविर में संभागी साधक अपनी अध्यात्म साधना को विकसित बनाते रहें।'

पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान पूर्वजन्म अनुभूति शिविर में नौ व्यक्ति संभागी बने। संभागियों को पूज्यप्रवर के पावन पाथेय के अतिरिक्त शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी एवं मुनि नीरजकुमारजी से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। प्रशिक्षक श्री मिश्रीमल चौधरी और श्री गिरजाशंकर दुबे भी इस कार्य में सहायक रहे।

जीवन बने अहिंसा की प्रयोगशाला

८ सितम्बर। *अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का सातवां और अन्तिम दिन। अहिंसा दिवस का समायोजन। मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। मुनि मदनकुमारजी ने अपने विचार रखे। मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक अहिंसा को आत्मगत करने की प्रेरणा दी।*

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'अहिंसा एक ऐसा तत्त्व है, जिसके साथ संयम की बात जुड़ी हुई है। व्यक्ति में यदि संयम का विकास होता है तो वह अहिंसा को परिपुष्ट बनाने वाला होता है। शरीरधारी के लिए पूर्णतया हिंसामुक्त रहना कठिन होता है। हिंसा के तीन प्रकार हैं--आरंभजा, प्रतिरोधजा और संकल्पजा। रसोई, खेती आदि में होने वाली अनिवार्य हिंसा आरंभजा हिंसा है। रक्षा की दृष्टि से प्रत्याक्रमण के रूप में होने वाली हिंसा प्रतिरोधजा हिंसा है। हिंसा के ये दोनों प्रकार गृहस्थ के लिए सर्वथा वर्जनीय नहीं माने गए। किन्तु क्रोध, लोभ आदि आवेगों के वशीभूत होकर की जाने वाली अनावश्यक हिंसा संकल्पजा हिंसा है, जो गृहस्थ के लिए भी सलक्ष्य त्याज्य है। व्यक्ति यदि सलक्ष्य प्रयास करता है तो वह अहिंसा के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'धर्म का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है--अहिंसा। इसे परम धर्म माना गया है। कहा गया है कि सभी प्राणियों को अपने समान समझो। तुम सुखी रहना चाहते हो तो दूसरे भी सुखी रहना चाहते हैं। उनके सुख में व्यवधान मत डालो, किसी को कष्ट मत दो। हमारे कारण कोई दुःखी न हो, ऐसा प्रयास जीवन की उदात्तता होती है। कभी भूलवश ऐसा कार्य हो जाए, जिससे किसी को ठेस पहुंची हो तो उसकी विशुद्धि करने का प्रयास करो। हम अपने जीवन को अहिंसा और नैतिकता की प्रयोगशाला बना लें तो सुखद परिणाम सामने आ सकते हैं। हम अहिंसा की केवल चर्चा ही न करें, अर्चा भी करें। उसकी अर्चा धूप, दीप आदि से नहीं, अपने जीवन व्यवहार में उसे प्रतिष्ठित करने से होती है। हम हिंसा के कारणों का निवारण कर अहिंसा की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।'

पूज्यवर के प्रवचन के उपरान्त कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित अतिथियों के स्वागत में चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। जोधपुर संभागीय आयुक्त श्री आर.के.जैन ने अपने वक्तव्य में कहा--'यदि हम जैनधर्म के अहिंसा सिद्धान्त को आत्मसात करें तो हमारा जीवन उन्नत बनेगा और समाज तथा राष्ट्र को भी हम नई दिशा दे सकेंगे।'

बाडमेर जिला कलेक्टर डा.वीणा प्रधान ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रवास से पूरे जिले में शान्तिपूर्ण वातावरण बना हुआ है। आपके प्रवचनों और पवित्र आभामंडल के कारण संपूर्ण बाडमेर जिले में सुखद माहौल निर्मित है। इसलिए मैं पुनः-पुनः आग्रह करती हूं कि आप हमारे जिले में अधिकाधिक प्रवास करें।' अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह की परिसंपन्नता पर श्री ओम बांठिया ने आभार ज्ञापित किया।

१ सितम्बर को आर्यनगर (हरियाणा) में दिवंगत साध्वी चांदांजी (श्रीडूंगरगढ़) का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए आचार्यवर ने चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया। कार्यक्रम में शासनसेवी स्व.श्री शंकरलाल मेहता (जोधपुर) की कृति 'अस्तित्व के इर्द-गिर्द' संभागीय आयुक्त श्री आर. के. जैन तथा मेहता परिवार के सदस्यों ने पूज्यवर को उपहृत की। इससे पूर्व कृति के संदर्भ में श्री हणवंतराय मेहता, श्री बिन्दु मेहता और श्रीमती संतोष मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस संदर्भ में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'शंकरलाल मेहता 'बाबूजी' की यह पुस्तक उनकी स्मृति कराने वाली है। मेहताजी को मैंने देखा है। जैन विश्वभारती स्थित तुलसी अध्यात्म नीडम में वे रहा करते थे। कितने-कितने प्रेक्षाध्यान शिविरों की समायोजना में उनका योगदान रहता था। प्रस्तुत पुस्तक से पाठकों को सत्प्रेरणा प्राप्त हो।'

अहमदाबाद से २३ बसों में लगभग ग्यारह सौ व्यक्तियों का संघ पूज्य सन्निधि में पहुंचा। कार्यक्रम

में अहमदाबाद तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्र चोपड़ा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। तेरापंथ कन्यामंडल ने गीत का संगान किया। अहमदाबाद के संघ ने ८-९ सितम्बर तक दो दिन रहकर पूज्यवर की उपासना का लाभ लिया। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा २०० बारहव्रती श्रावक-श्राविकाओं, ५०० जैन जीवनशैली के स्वीकरण पत्र तथा ५०० अणुव्रत स्वीकरण के संकल्प पत्र पूज्य चरणों में उपहृत किए गए।

भीलवाड़ा से ४०० व्यक्तियों का संघ भी दो दिवसीय उपासना हेतु आज गुरु चरणों में उपस्थित हुआ। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शैलेन्द्र बोरदिया ने अपने भावोद्‌गार व्यक्त किए। मध्याह्न में आहार के पश्चात वीतराग समवसरण में उपस्थित आदर्श विद्या मंदिर जसोल एवं आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय माजीवाला के विद्यार्थियों को पूज्यप्रवर का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। आचार्यवर ने विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ सत्संस्कारों को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। विद्यार्थियों ने आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। शासनश्री मुनि किशनलालजी एवं मुनि मदनकुमारजी ने विद्यार्थियों को जीवनविज्ञान का प्रशिक्षण भी दिया।

आज रात्रि में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अन्तर्गत महावीर विद्यामंदिर पचपदरा द्वारा 'अहिंसा परमो धर्मः' नामक परिसंवाद प्रस्तुत किया गया।

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद का बीसवां अधिवेशन

६ सितम्बर। *प्रातःकालीन कार्यक्रम में पचपदरा ज्ञानशाला के बच्चों ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के लिए राष्ट्रपति भवन से प्राप्त सन्देश के सन्दर्भ में अभातेयुप के सहमंत्री श्री हनुमान लूंकड़ ने जानकारी दी और सन्देश का वाचन किया। सुजानगढ़ से समागत संघ की ओर से श्री तनसुख बैद व श्री पवनराज नाहटा ने अपने विचार रखे। अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन को अध्यक्ष श्री गणेश डागलिया व अन्य पदाधिकारियों ने पूज्यवर को भेंट किया। कवि श्री डालमचन्द दाड़िम ने अपनी कविता प्रस्तुत की। मुनि विजयकुमारजी ने गीत एवं मुनि मदनकुमारजी ने वक्तव्य प्रस्तुत किया।*

मुमुक्षु धीरज खांटेड़ (पचपदरा) ने अपने वक्तव्य में शीघ्रातिशीघ्र दीक्षा की आज्ञा प्रदान करने की प्रार्थना की। बहिन राजुल ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मुमुक्ष धीरज के प्रपितामह ताराचन्दजी, पिता जितेन्द्रजी, माता संगीता खांटेड़ एवं परिवारजनों के निवेदन पर अत्यन्त अनुग्रह करते हुए आचार्यप्रवर ने ५ नवम्बर २०१२ को जसोल में मुनि दीक्षा देने की स्वीकृति प्रदान की।

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान का २०वां राष्ट्रीय अधिवेशन आज से प्रारंभ हुआ। शिक्षकों ने अणुव्रत गीत को सामूहिक प्रस्तुति दी। शिक्षक संसद के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नखत, विशिष्ट मार्गदर्शक डॉ. हीरालाल श्रीमाली, राष्ट्रीय सहसंयोजक श्री धर्मचन्द जैन 'अनजाना', डॉ. धर्मेन्द्र आचार्य, प्रो. मदनलाल कावड़िया, प्रो. साधुशरणसिंह 'सुमन' ने अलग-अलग विषयों पर अपने वक्तव्य दिए। इस अवसर पर शिक्षक संसद द्वारा देश भर से भराए गए नशामुक्ति के बयालीस लाख संकल्प पत्र आचार्यवर को भेंट किए गए।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'प्रज्ञा के जागरण से भीतर का विवेक जाग जाता है, करणीय-अकरणीय का बोध हो जाता है। अवबोध के बाद करणीय को स्वीकारें और अकरणीय को छोड़ें। शिक्षक पुस्तक से पढ़ाते हैं, यह प्रारंभिक बात है। यदि वे अपने जीवन से पढ़ाएं तो उसका प्रभाव अलग ही होगा। बच्चे में अनुकरण की प्रवृत्ति ज्यादा होती है। वे आपके व्यवहार को बड़ी सूक्ष्मता से देखते हैं। शिक्षकों का जीवन ज्ञानमय और आचारमय हो।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है। जिसके पास ज्ञान नहीं, वह एक प्रकार से दृष्टिहीन है। प्रज्ञा को चक्षु कहा गया है, जो अज्ञानता के अंधकार को दूर करने में समर्थ है। अज्ञान एक अभिशाप है। उससे मुक्त होना चाहिए। जिसके पास प्रज्ञा नहीं,

विवेक नहीं, उसका धर्मशास्त्र भी उद्धार नहीं कर सकते। शिक्षा व विद्या के अभ्यास से व्यक्ति के ज्ञान का विकास होता है। प्रज्ञा का जागरण हो, विद्या का अभ्यास हो तथा ज्ञान पुष्ट बने तो समझे जीवन में एक संपदा उपलब्ध हो गई। शिक्षक को गुरु कहा गया है। गुरु अंधकार विनाशक होते हैं।'

आगमों में वर्णित ज्ञान प्राप्ति के पांच बाधक स्थानों/कारणों की मीमांसा करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा--'विद्या प्राप्ति में अहंकार पहली बाधा है। गुरु से ज्ञान ग्रहण करना है तो झुको, प्रणिपात करो, सेवा करो। क्रोध दूसरा बाधक तत्त्व है। व्यक्ति को सदैव शान्त रहना चाहिए। विषय व कषाय से आविष्ट व्यक्ति प्रमादी हो जाता है। प्रमाद, रोग व आलस्य भी ज्ञान प्राप्ति में बाधक कारण हैं। शिक्षक के जीवन व्यवहार में अणुव्रत आए। इससे विद्या के साथ-साथ आचारसंपन्नता भी आ सकेगी। विद्या व आचार के अनुशीलन से मुक्ति प्राप्त हो सकती है। कागजों की पोथी से पढ़ाना मूल्यवान है, पर शिक्षक अपने जीवन की पोथी से भी पढ़ाएं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान अच्छा संगठन है। इसके अधिवेशन में पूरे देश से कहां-कहां से शिक्षक आते हैं। इस संगठन के साथ कितने कार्यकर्ता जुड़े हुए हैं। इन कार्यकर्ताओं को देखता हूं तो अच्छा लगता है। निष्ठा से अपने कार्य में संलग्न ये कार्यकर्ता अपने समय का नियोजन करते हैं, भागदौड़ करते हैं। इस मिशन से जुड़े लोग कल्याण व परोपकार की भावना से कार्य करते रहें। कोई भी अकल्याणकारी कार्य न हो। संसद से संपृक्त शिक्षक अणुव्रत का कार्य करते रहें और इस मार्ग पर आगे बढ़ते रहें।'

अध्यात्म विद्या है सर्वश्रेष्ठ विद्या

१० सितम्बर। *प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञानवान व्यक्ति जीवन में निर्विघ्नता से आगे बढ़ता है। ज्ञान के साथ संयम का अंकुश हो। ज्ञान के अभाव में व्यक्ति अपने पथ से भटक जाता है। संयमविहीन ज्ञान से जीवन में खतरा बना रहता है। जबकि संयमयुक्त ज्ञान से अपनी लक्षित मंजिल पर पहुंचा जा सकता है।'*

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा--'विनीत व्यक्ति संपदा को प्राप्त करता है, जबकि अविनीत विपत्ति के साये में आ जाता है। मनुष्य के जीवन में शिक्षा का बड़ा महत्त्व है। सरकार के प्रयासों से स्थान-स्थान पर शिक्षा संस्थान स्थापित हुए हैं। विद्या के द्वारा विद्यार्थी में ऐसे संस्कारों का अवतरण हो, जिससे वे नशे जैसी बुराई की ओर न जा सकें। आज के विद्यार्थी आधुनिक माध्यमों से ज्ञानार्जन करते हैं। जीवनविज्ञान का यह मंतव्य है कि शारीरिक व मानसिक विकास के साथ भावात्मक विकास भी हो। आईक्यू के साथ ईक्यू का भी महत्त्व है। विद्यार्थी में चरित्र व भावात्मक मूल्य जीवनगत हों। विद्यार्थी अगर नशामुक्ति का संकल्प लें तो वह न केवल उनके स्वयं के जीवन के लिए, बल्कि परिवार व समाज के लिए भी बहुत उपयोगी है। यह समाज और देश की भी बहुत बड़ी सेवा है। विद्याओं में सर्वश्रेष्ठ विद्या अध्यात्म विद्या है। विद्या संस्थानों का यह लक्ष्य बने कि विद्यार्थियों के जीवन में सत्संस्कार आएं। इससे उनका जीवन सफल व सार्थक बन सकेगा।'

अखिल भारतीय विद्या भारती संस्थान के राष्ट्रीय मंत्री श्रीराम अरावकर ने अपने वक्तव्य में शिक्षा में मानवीय मूल्यों की उपादेयता पर चर्चा की। शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि मदनकुमारजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। गांधीनगर (दिल्ली) से समागत एक सौ पन्द्रह व्यक्तियों के संघ की ओर से तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री जुगराज डागा ने अपने विचार रखे।

गुरुधारणा हेतु समय निर्धारण

परम पावन आचार्यप्रवर ने अनिश्चितकाल तक गुरुकुलवास में गुरुधारणा हेतु प्रतिदिन प्रातः ग्यारह

बजकर ग्यारह मिनट का समय निर्धारित करने की घोषणा की है। पूज्यप्रवर घोषणानुसार निर्धारित समय पर प्रतिदिन गुरुधारणा करवा रहे हैं।

जैन रामायण पर आचार्यप्रवर का प्रवचन प्रारंभ

आज से रात्रि में जैन रामायण पर पूज्य आचार्यप्रवर का प्रवचन प्रारंभ हुआ। रामायण आख्यान का वाचन प्रारंभ करते हुए आचार्यवर ने कहा--'व्याख्यान-आख्यान का क्रम सतत चलता रहता है। अनेकानेक आख्यान रचे गए हैं। उन आख्यानों में रामायण के व्याख्यान को सिरमौर कहा जाए तो संभवतः अतिशयोक्ति नहीं होगी। रामायण के प्रति जनमानस में एक आकर्षण दृष्टिगोचर होता है। राम को लेकर कितने-कितने ग्रंथ निर्मित हैं। अपने यहां यति केशराज विरचित 'रामयशोरसायन' विभिन्न राग-रागिनियों से युक्त एक वैदुष्यपूर्ण, रुचिपूर्ण व रसपूर्ण गेयकाव्य है। इस रामायण की रचना वि.सं.१६८३ में हुई। वि.सं. १८५३ में आचार्य भिक्षु ने संशोधन व संपादन कर इसे आगमसम्मत बनाने का प्रयास किया। इसके चार खंडों में चौंसठ ढालें हैं। प्राकृत भाषा में 'पउमचरिउ' ग्रंथ प्राप्त होता है। सनातन परम्परा में गोस्वामी तुलसीदासजी की एवं बाल्मीकिकृत रामायण भी प्रसिद्ध है।' आचार्यप्रवर ने आज प्रारंभिक दोहों का संगान करते हुए सरस विवेचन किया। रामायण पर प्रवचन से पूर्व मुनि रजनीशकुमारजी ने 'श्रावक संबोध' के संदर्भ में वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने किया।

आत्मानुशासन को साधें

११ सितम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'ज्ञान के साथ आचरण आवश्यक है। हेय व उपादेय का ज्ञान कर हेय को छोड़ते जाओ। ज्ञ परिज्ञा के साथ प्रत्याख्यान परिज्ञा का होना भी जरूरी है। ज्ञान व आचरणसंपन्न व्यक्ति समाज के मार्गदर्शक बनते हैं। उनका जीवन महान व पावन होता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हर व्यक्ति सुख का आकांक्षी है। सुख पाने के लिए उसे आत्मा पर नियंत्रण रखना होगा। आत्मनियंत्रण करना इतना सरल नहीं है। इसके लिए आत्मानुशासन अपेक्षित है। इसे पुष्ट करने के लिए मन, वचन, काय एवं इन्द्रियों पर अनुशासन जरूरी है। अधिक से अधिक निवृत्ति में रहने का अभ्यास, कायक्लेश का अभ्यास करें व वाणी पर नियंत्रण रखें। साधना एवं व्यवहार--दोनों दृष्टियों से वाणी का संयम आवश्यक है।'

अणुव्रत शिक्षक संसद के शिक्षकों एवं कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'जीवन व्यस्त बने, पर अस्तव्यस्त न बने। व्यक्ति का मन बंधन और मोक्ष का कारण बनता है। विषयासक्त मन बंधन व अनासक्त मन मोक्ष का हेतु है। मन व इन्द्रियों के अनुशासन से आत्मानुशासन पुष्ट होता है। आत्मानुशासन के सधने से परानुशासन स्वयं न्यून होने लगता है। सभी अपने जीवन में आत्मानुशासन को साधने का प्रयास करें।'

प्रवचन के अनंतर 'डालिम चरित्र' पर आचार्यवर ने सरस व्याख्यान दिया। गांधीनगर-दिल्ली से समागत संघ ने सामूहिक गीत का संगान किया। बालोतरा निवासी श्रीमती आशादेवी गोलेच्छा (धर्मपत्नी-श्री अशोक गोलेच्छा) ने बहत्तर दिनों की प्रलंब तपस्या का आचार्यवर से प्रत्याख्यान किया। उपस्थित लोगों ने 'ऊं अर्हम्' की ध्वनि के साथ अपना हर्ष व्यक्त किया। उल्लेखनीय है--तपस्विनी बहन ने पांच मासखमण, इकतालीस, इक्यावन व इकसठ दिनों की तपस्या के साथ तेरह अठाई भी संपन्न की है। तपस्या की अनुमोदना में श्री कमलेश चोपड़ा ने मुक्तक, श्रीमती शांति तलेसरा, श्रीमती कमलादेवी ओस्तवाल एवं डा.महावीर गोलेच्छा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। गोलेच्छा परिवार की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

अणुव्रत शिक्षक संसद के त्रिदिवसीय अधिवेशन में २२५ शिक्षकों ने भाग लिया। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के प्रसंग पर एक करोड़ लोगों को व्यसनमुक्त बनाने के संकल्प के अन्तर्गत बयालीस लाख संकल्प पत्र शिक्षक संसद द्वारा पूज्यवर को उपहृत किए गए। पूर्व में बालोतरा में भेंट किए गए पचास लाख संकल्प पत्र सहित बानबे लाख संकल्पपत्र अब तक भेंट किए जा चुके हैं। अवशिष्ट इसी पावस प्रवास में भेंट करने की योजना है।

अधिवेशन के एक सत्र में पांच समूहों में क्रमशः मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) के पास में विविध राज्यों के शिक्षकों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में किए जा रहे अणुव्रत, व्यसनमुक्ति व अहिंसा प्रशिक्षण संबंधी कार्यों की प्रस्तुति दी गई। अधिवेशन में यह संकल्प व्यक्त किया गया कि अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह हेतु आयोज्य वर्ष में संस्थान द्वारा अणुव्रत कार्य से जोड़ने के लक्ष्यानुसार इक्यावन लाख शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावकों को अपने-अपने क्षेत्रों में फील्ड वर्क के लिए नियोजित किया जाए। अधिवेशन का निष्पत्ति पत्र श्री भीखमचन्द नखत व डा. हीरालाल श्रीमाली ने पूज्यप्रवर को समर्पित किया।

साध्वी चांदांजी कालधर्म को संप्राप्त

गत १ सितम्बर को आर्यनगर-हिसार में प्रवासित साध्वी मोहनांजी (श्रीडूंगरगढ़) की सहवर्तिनी साध्वीश्री चांदांजी का सायं लगभग चार बजे स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'साध्वी चांदांजी का जन्म श्रीडूंगरगढ़ के मालू परिवार में हुआ था। वहीं के डागा परिवार में उनका पाणिग्रहण संस्कार हुआ। वे वि.सं.२००३ में इक्कीस वर्ष की अवस्था में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा चूरू में दीक्षित हुईं। साध्वी हरकंवरजी (फतेहपुर) के साथ लगभग पचीस वर्षों तक रहने के उपरान्त स्वर्गवास तक अपनी संसारपक्षीया अनुजा साध्वी मोहनाजी (श्रीडूंगरगढ़) के साथ रहीं। पिछले कुछ समय से वे अस्वस्थ थीं। वि.सं.२०६९ के द्वितीय भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदा को आर्यनगर (हिसार) में वे कालधर्म को प्राप्त हो गईं। दिवंगत आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।'

साध्वी मोहनकुमारीजी आदि साध्वियों का आध्यात्मिक सहकार उन्हें प्राप्त हुआ। स्थानीय श्रावक समाज ने जागरूकतापूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन किया।

विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन

गत सप्ताह जिन विशिष्ट व्यक्तियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पाथेय प्राप्त किया, उनके नाम इस प्रकार हैं--

५ सितम्बर	श्री मेवाराम जैन, विधायक बाड़मेर। श्री मदन प्रजापत, विधायक पचपदरा।
६ सितम्बर	श्री गोपाराम मेघवाल, अध्यक्ष राजस्थान अनुसूचित जनजाति कल्याण बोर्ड।
७ सितम्बर	श्री अमराराम चौधरी, पूर्व गृहमंत्री राजस्थान। श्री जनार्दन व्यास, रजिस्ट्रार-जनरल विजिलेंस, राजस्थान हाईकोर्ट।
८ सितम्बर	श्री आर.के.जैन, संभागीय आयुक्त, जोधपुर (राजस्थान)। डा.वीणा प्रधान, जिला कलेक्टर, बाड़मेर
९ सितम्बर	श्री दलेर मेंहंदी सुप्रसिद्ध पॉप सिंगर एवं पार्श्व गायक। श्री वज्जूभाई वगासिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष- लघु उद्योग भारती। श्री राजेश जैन, वाणिज्य कराधिकारी, बालोतरा। श्री रमेश सिंघवी, अधिशासी अभियंता- जोधपुर विद्युत निगम।
१० सितम्बर	श्री राम अरावकर, राष्ट्रीय मंत्री- विद्या भारती, बालोतरा।

स्मृति-संबल

- *परतूर (महाराष्ट्र) निवासी डॉ. मानकचंद नाहर का निधन हो गया। अणुव्रतसेवी स्व. लालचंदजी नाहर उनके अग्रज थे। श्रद्धानिष्ठ श्रावक मानकचन्दजी वर्ष में दो बार गुरु दर्शन करते, नियमित सामायिक करते एवं साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा का भी लाभ लेते थे।*
- *भुसावल (महाराष्ट्र) निवासी श्री लखीचन्द निमाणी का अनशनपूर्वक स्वर्गवास हो गया। वे सरल व शांत स्वभाव के श्रावक थे। जप, सामायिक उनका नित्यक्रम था। उनके संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। संथाराकाल में समणी निर्वाणप्रज्ञाजी आदि समणीजी के पदार्पण व प्रवास से वातावरण विशेष अध्यात्ममय बन गया।*
- *सरदारशहर निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती धापूदेवी दूगड़ (धर्मपत्नी श्री लाधूराम दूगड़) का निधन हो गया। अहमदाबाद में सौ वर्ष पूर्व थली तेरापंथ समाज से समागत प्रथम परिवार आसकरण रामलाल दूगड़ की कुलवधु धापुदेवी के मात्र छह वर्ष की उम्र से जमीकन्द का त्याग था। तीन सामायिक, रात्रि भोजन परिहार, नवकारसी या पोरसी, प्रायः प्रवचन श्रवण उनका नित्यक्रम था। उनमें साधु-साध्वियों के सुपात्र दान की बलवती भावना रहती थी। साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा के साथ प्रतिवर्ष दो माह गुरु उपासना का भी लाभ लेती थी। आचार्यवर के सरदारशहर चतुर्मास में सेवा का अच्छा लाभ लिया। उनकी प्रेरणा से पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। उनके पति लाधूरामजी धार्मिक स्वभाव के हैं। उनके सुपुत्र भंवरलाल, चैनरूप आदि सक्रिय कार्यकर्ता हैं।*
- *केलवा निवासी उदयपुर प्रवासी श्री मोहनलाल कोठारी का चौविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। मोहनलालजी धार्मिक अभिरुचि के श्रावक थे।*
- *छापर निवासी जयपुर प्रवासी श्री टीकमचंद बैद का निधन हो गया। उनका कार्यक्षेत्र कोड़ीग्राम, विराटनगर व बोरावड़ था। वे श्रद्धालु, व्यवहारकुशल व सरल स्वभावी थे। चुरु कलेक्टर द्वारा 'माटी के लाल' रूप में सम्मानित टीकमचन्दजी निर्भीक थे। कहते हैं कि बोरावड़ में डाकुओं द्वारा की जा रही गोली बारी के बीच निःशस्त्र होकर उन्होंने दस्युओं का सामना किया और उन्हें भगा दिया। उनकी धर्मपत्नी सुवटीदेवी को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त था। उनके सुपुत्र जयपुर के अच्छे कार्यकर्ता हैं।*
- *बीदासर निवासी हैदराबाद प्रवासी श्रीमती अणचीदेवी बैंगानी (धर्मपत्नी-स्व.इन्द्रचन्दजी बैंगानी) का नब्बे वर्ष की उम्र में चौविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। उन्हें पिछले पचास वर्षों से रात्रि भोजन का त्याग था। वे हर चतुर्दशी को उपवास करती थीं। जीवन में अनेक तपस्याएं कीं। उनका जीवन सादगीपूर्ण था। साध्वी अमितप्रभाजी उनकी संसारपक्षीया सुपुत्री हैं। मुनि मुनिसुव्रतजी, मुनि मुदितकुमारजी, साध्वी नयश्रीजी, स्व. मुनिश्री दुलीचन्दजी 'दिनकर', स्व. साध्वी लिछमाजी (सूरतगढ़), स्व. साध्वी लिछमाजी (सिरसा) उनके संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध हैं। पूरे परिवार में धर्म के गहरे संस्कार हैं।*
- *उदयपुर निवासी डा. जी. एल. जैन का निधन हो गया। निधन से कुछ समय पूर्व २५ अप्रेल को बालोतरा में पूज्यवर की सन्निधि में उन्हें 'प्रेक्षा पुरस्कार २०१२' से सम्मानित किया गया था। वे उत्कृष्ट जैव प्रौद्योगिकी शास्त्री व सामाजिक कार्यकर्ता थे। प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान के क्षेत्र में उनकी सक्रियता ने उनको एक योग प्रशिक्षक के रूप में पहचान दी। उनकी साधना, शिक्षा, सेवाभावना, अध्यात्मनिष्ठा उल्लेखनीय थी। सरल, हंसमुख स्वभाव व बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी जी. एल. जैन प्रेक्षा वर्ष की समग्र संयोजना में पूर्ण सक्रिय रहे। वे अच्छे वक्ता और निष्ठाशील श्रावक थे।*
- *छोटीखाटू निवासी चेन्नई प्रवासी श्री अमोलकचन्दजी भंडारी का स्वर्गवास हो गया। वे चेन्नई के वरिष्ठ श्रावक थे। भंडारी परिवार धर्मनिष्ठ परिवार है।*
- *सुजानगढ़ निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती किरणदेवी राखेचा (धर्मपत्नी-श्री झणकारमलजी राखेचा)*

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

का देहावसान हो गया। रात्रि भोजन का यावज्जीवन परिहार रखने वाली श्रीमती किरणदेवी के प्रतिदिन दो सामायिक, जप आदि का क्रम था। चतुर्मास में वे गुरु उपासना का लाभ लेती रहीं। उनके ससुर उदयचन्दजी के पात्रदान की बलवती भावना रहती थी। परिवार में यह संस्कार आज भी जीवंत है।

- *सायरा निवासी सूरत प्रवासी श्री हुकमीचन्दजी कावड़िया का देहान्त हो गया। उनके सामायिक, जप आदि धार्मिक उपासना का नित्यक्रम था।*
- *गंगाशहर निवासी सिलचर (गुवाहाटी) प्रवासी श्री मूलचन्दजी भंसाली का देहावसान हो गया। उनका जीवन धार्मिकता से ओतप्रोत था। सामायिक आदि नित्य उपासना का क्रम था। प्रायः प्रतिवर्ष गुरुदर्शन किया करते थे। देहावसान के बाद उनका नेत्रदान किया गया। उनकी धर्मपत्नी गौरादेवी तपस्विनी व श्रद्धानिष्ठ श्राविका है।*

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- कल्याणमित्र श्री बाबूलाल-रूपकंवर छाजेड़ (अजमेर) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू अनिल-ज्योति, सुपौत्र आदि, सुपौत्री रिद्धिका एवं सिद्धि छाजेड़ द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्री संपतकुमारजी सुराणा (तारानगर-दिल्ली) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सज्जनदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू पुष्पेन्द्र-संजना, सुपौत्र ध्रुव, आयुष सुराणा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- राजलदेसर से पैदल यात्रा करते हुए भाद्रव शुक्ला तेरस को श्रीभिक्षु समाधि स्थल सिरियारी पहुंचने एवं जसोल में परमपूज्य आचार्यश्री के दर्शन-उपासना करने के उपलक्ष्य में बरड़िया परिवार, राजलदेसर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती मोहिनीदेवी पारख (धर्मपत्नी-स्व. श्री सोभागमलजी पारख, आगरा) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र एवं पुत्रवधू निर्मल-सरोज, मांगीलाल-चन्द्रप्रभा, विनोद-पुष्पा, आमोद-प्रेम, सुपौत्र एवं पौत्रवधू-धीरज-नयना, गौरव-अनु, गगन-सीमा, विशाल-नेहा, श्रेयांस-मुदित पारख, आगरा-मदुरै-हैदराबाद-रायपुर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. विवान (प्रपौत्र रेंवतमल-शांतिदेवी, सुपौत्र राजकुमार-सरोज, सुपुत्र अरिहंत-नेहा, भीनासर-रायपुर) के शुभ जन्म के उपलक्ष्य में निर्मलकुमार-मंजुदेवी, श्रेयांस-सोनल एवं आशीष, ऋषभ बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. वेदान (प्रपौत्र-स्व. कन्हैयालाल-सुगनीदेवी, सुपुत्र-चेतन-दर्शना सेठिया) के शुभ जन्म के उपलक्ष्य में रमेशचन्द, अशोकचन्द, दिलीपचन्द, सुनीलचन्द सेठिया, जालना (महाराष्ट्र) द्वारा प्रदत्त।

- *विज्ञप्ति के जिन सदस्यों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण शीघ्र करवा लें। वार्षिक शुल्क २५०/- अथवा पन्द्रह वर्ष के लिए शुल्क २१००/- हमारे शिविर कार्यालय अथवा दिल्ली कार्यालय में जमा कराएं। शुल्क आदर्श साहित्य के एकाउण्ट नं. ०१३३०००१००३६८३५९ (पंजाब नेशनल बैंक) में भी जमा कर सकते हैं।*

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : १५-६-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**